HANS SHODH SUDHA. Vol. 1, Issue 3, (2021), pp. 44-45

'अनुवाद' बना राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधार स्तंभ

प्रो. पूरनचंद टंडन

लगभग 45 केंद्रीय विश्वविद्यालय और 900 के आस-पास अन्य विश्वविद्यालयों वाला यह देश भारत दुनिया भर में सबसे बड़ी शिक्षा-प्रणाली वाला देश है। लगभग 16 लाख विद्यालय, 50 से अधिक राष्ट्रीय-अंतरर्राष्ट्रीय महत्त्व की संस्थाएँ, लगभग 25 आई.आई.टी. संस्थाएँ, 30 के आस-पास एन.आई.टी. तथा अन्य अनेक शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान भारत की शिक्षा-पद्धति और नीति की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं। वृहत् जनसंख्या, विराट भूगोल तथा अनंत चुनौतियों-समस्याओं वाले इसी देश ने शिक्षा को महत्त्व तो दिया किंतु लगभग 34 वर्षों के पश्चात समकालीन अपेक्षाओं, आवश्यकताओं को देखते हुए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने का भी पुण्य प्रमाण किया है। स्कूल शिक्षा, उच्च शिक्षा, व्यावहारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा, कानूनी शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान एवं व्यवसाय क्षेत्र की शिक्षा जैसे अनेक आयाम हैं जिन पर इस नई शिक्षा पद्धति ने बहुत ही बड़े स्तर पर सुदीर्घ विमर्श-विवेचन से अध्ययन-चिंतन आधृत नई प्रणाली और सार्थक पद्धति अपनाने का रचनात्मक ग्रहण किया है

अब शिक्षा का अधिकार, नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक 5 + 3 + 3 + 4 का नया फार्मूला अर्थात् चार चरणों में विभक्त इस पूरी शिक्षा पद्धति की बुनियादी विकास यात्रा का मार्ग प्रशस्त किया गया है। राष्ट्रीय नियामक प्राधिकरण के गठन के पर्यावरण हितैषी-शिक्षण-प्रशिक्षण पर बल, शिक्षण के बहु-विकल्पीय अवसरों की उपलब्धि, रेमेडियल, शिक्षा की सशक्त व्यवस्था, कमजोर, असमर्थ, निर्धन तथा पिछड़े वर्ग के छात्र-छात्राओं हेतु अतिरिक्त शिक्षण की व्यवस्था, लेखन-कौशल, भाषा और गणित आदि तकनीकी विषयों का मेल, पठन-पाठन तथा संवादात्मक अभिव्यक्ति कौशल की संस्कृति का विकास, पठनीयता की अभिरुचि जाग्रत करने के प्रमाण तथा व्यवहार एवं रोजगार मूलक तकनीकी शिक्षा अर्जन के नए-नए द्वार खोलने का दर्शन, इसी विलक्षण परिकल्पना का परिचायक है।

राष्ट्र की नई शिक्षा नीति में नई वैश्विक चुनौतियों को देखते हुए, उसका जानना और मुकाबला करने वाली शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत कम्प्यूटर, लैपटॉप, स्मार्ट मोबाइल फोन, ट्वीटर, ब्लॉग राइटिंग, ई लर्निंग सिस्टम से अभिज्ञता, ऑन लाइन शिक्षण-प्रशिक्षण उपकरणों के अनुप्रयोग की तकनीक का बोध, सभी शिक्षकों का इस दृष्टि से प्रशिक्षण, अधुनातन एवं अद्यतन विश्व ज्ञान की सभी संभावनाओं को उद्घाटित करने के उपाय तो इस नई शिक्षा पद्धति के प्रेरक तत्व हैं ही, लर्निंग ''विदाउट बर्डन'' अर्थात् बिना किसी बोझ की अनुभूति के शिक्षा अर्जित करना, शिक्षा को मनोरंजक एवं अभिरुचि परक बनाना भी इसके मानचित्र का हिस्सा रहा है।

सत्तर-बहत्तर वर्ष की आजादी के बाद भी हमारी शिक्षा पद्धति एक व्यवस्था अंग्रेजी की बैशाखियों पर ही चलती रही। लाखों-करोड़ों विद्यार्थी स्कूल और कॉलेजों में प्रवेश लेकर भी बीच यात्रा में ही पढ़ना-लिखना इसीलिए छोड़ते रहे कि उन्हें अंग्रेजी नहीं आती। अंग्रेजी ने उच्च शिक्षा को तो पूर्णतः आंतकित किया ही है न जाने कितने ही कालिदास, कितने ही भर्तृहरि, कितने ही महाकवि भास अंग्रेजी आधृत शिक्षा पद्धति के भय के कारण पूर्णतः प्रतिभाशाली होकर भी शिक्षा से वंचित रह गए। नई शिक्षा पद्धति ने इन सभी त्रुटियों, चुनौतियों, समस्याओं का गहन-गंभीर अध्ययन कर कुछ नए एवं सार्थक परिदृश्य खड़े किए हैं। अंतरानुशासनात्मक शिक्षा, बहुअनुशासनात्मक शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षा अर्जन के विकल्प, कौशल-विकास आधृत शिक्षा, भारतीय परंपराओं को उद्घाटित करने एवं उनका गहन ज्ञानार्जन करने वाली शिक्षा, विश्वस्तरीय अनुसंधान-उन्मुख शिक्षा, विषय निष्ठ एवं रोजगार-मूलक उच्च शिक्षा, उच्च गुणवत्ता पर बल देने वाली शिक्षा तथा मानवता और भाईचारे को बढ़ाने वाली, मूल्य-बोध कराते हुए बच्चों और युवाओं को केवल धनार्जन की मशीन न बनाकर, उन्हें एक सुसंस्कृत नागरिक, राष्ट्र समर्पित मानव बनाने वाली शिक्षा का सूत्रपात कराने का आह्वान इस पद्धति में किया गया है। केवल उपाधि बाँटना उद्देश्य न रहे, केवल नौकरी माँगने का स्वप्न न रहे, रोजगार प्रदान करने वाली शिक्षा पद्धति तैयार हो सके। आत्मनिर्भर नागरिक तैयार हों, केवल रटन्तु विद्या या किताबी विद्या मात्र न हो, मानसिक, आत्मिक एवं आध्यात्मिक विकास भी शिक्षा द्वारा संभव हो सकें, यह प्रमाण भी इस परिवर्तन के मूल में स्पष्ट परिलक्षित होते हैं।

इस नई शिक्षा पद्धति और नीति ने भारतीय भाषाओं के

विकास तथा हिंदी और अनुवाद-अनुशासन को विशिष्ट महत्त्व देते हुए एक सशक्त आधारशिला रख दी है। हमारे विद्यार्थी कंपनी, मातृभाषा, दानभाषा, राष्ट्रभाषा आदि की कीमत पर अंग्रेजी के अध्येता बनाए जा रहे थे। अब भारतीय भाषाओं में, राष्ट्र की महत्वपूर्ण भाषा हिंदी में अधुनातन-अद्यतन शिक्षा-अर्जन भी संभव हो, इसकी व्यवस्था की गई है। अनुवाद से अथवा मौलिक लेखन से अब ज्ञान-विज्ञान की पाठ्य पुस्तकें निर्मित हों, संदर्भ ग्रंथ तैयार किए-कराए जाएँ, ई-लर्निंग की सामग्री का निर्माण हो जिससे हम भारत का नव-निर्माण कर सकें। शिक्षण-शास्त्र में अनुवाद की सशक्त भूमिका सुनिश्चित हो। अब अनुवाद दोयम दर्जे का विषय या अनुशासन न रहे। अब अनुवाद को ''पाप'' या ''प्रवञ्चना'' न कहा जाए बल्कि उसकी आंतरिक शक्ति एवं उपादेयता को सही अर्थों में समझा जाए जिससे समस्त जीवनोपयोगी क्षेत्रों की शिक्षा मिल सके और स्वभाषा में मिल सके। अनुवाद को अब राष्ट्रीय विकास का, बहुआयामी नव-निर्माण का सशक्त उपकरण, सार्थक साधन तथा परिणामगामी सेतु बनाकर उसका यथासंभव दोहन किया जाए।

अनुवाद से अध्ययन-अध्यापन की अद्यतन सामग्री का निर्माण हो, अनुवाद की कसौटी निर्धारित हो, अनूदित पाठ्य सामग्री की गुणवत्ता निर्धारित हो। पुस्तकों, पांडुलिपियों, अभिलेखों, उपेक्षित दुर्लभ ग्रंथों, कालजयी भारतीय संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाली विलक्षण रचनाओं के भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद हों, विदेशी-भाषाओं में भी युद्ध स्तर पर आदर्श अनुवाद हों ताकि विश्व के समक्ष भारतीय मनीषा और प्रतिभा की सही-सही छवि उभर कर आए। भारतीय भाषाओं के शब्दकोश, विश्वकोश बनें। ई-कोश निर्मित हो, अद्यतन शब्दावलियाँ बनाई जाएँ, अनुप्रयोग कोश बनाए जाएँ तथा भारतीय भाषाओं की वृहत् शब्द-सम्पदा को समृद्ध एवं सम्पन्न बनाया जाए, इसके भी प्रावधान दिए गए हैं।

तत्काल भाषांतरण पर बल देने का सुझाव भी दिया गया है। ''अनुवाद और विवेचना'' अथवा ''अनुवाद और निर्वचन'' क्षेत्र में व्यापक कार्ययोजनाएँ बनाने उनका कार्यान्वयन करने का संकल्प लेने पर भी बल दिया गया है। नीति ने ''इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एवं इंटरपिटेशन'' की स्थापना की घोषणा भी की है। भाषा तथा विषयों को आधुनिकीकरण एवं प्रौद्योगिकी से जोड़ने में इससे लाभ मिलेगा। संभावना है कि हर राज्य में एक ''अनुवाद अकादमी'' बने। कम-से-कम एक या दो ''अनुवाद विश्वविद्यालय'' बनें और ''अनुवाद प्राधिकरण'' की स्थापना भी अनेक राष्ट्रीय स्वप्नों को पा सकेगी।

नई शिक्षा नीति ने विद्यालयी पाठ्य पुस्तकों के अनुवाद की, भारतीय भाषाओं में उनकी उपलब्धता की, शिक्षण सामग्री की एकरूपता की चिंता भी की है। इससे समेकित भारतीय संस्कृति को स्वर मिलेगा, परस्पर भारतीय भाषाओं में उपलब्ध संपदा का बोध हो सकेगा।

भारतीय भाषाओं की अंग्रेजी-हिंदी तथा हिंदी-अंग्रेजी की तरह ज्ञान-विज्ञान मूलक अवधारणात्मक शब्दावली तैयार करने का संकल्प भी नीति के उद्देश्यों में शामिल है। इससे भारतीय एकता, राष्ट्रीय अस्मिता तथा गौरवशाली भारतीय अतीत एवं विरासत द्योतक संपदा का परिचय भी मिल सकेगा। बहु अनुशासनात्मक (बहु-विषयक) शिक्षा की ओर अग्रसर होने का संकल्प स्तुत्य एवं प्रणम्य संकल्प है। 24 तरह के प्रमाणों से भारतीय साहित्य, कला, ज्ञान-विज्ञान, समाजशास्त्र आदि विषयों को उद्घाटित करने, उनका प्रचार-प्रसार करने का स्वप्न भी पूरा हो सकेगा।

अनुवाद के पाठ्यक्रम सभी विश्वविद्यालयों में प्रारंभ करने, इन पाठ्यक्रमों के क्रेडिट निर्धारण तथा अंतरण करने की व्यवस्था करवाने, अभ्यास पुस्तकें, वर्क-बुक, पत्र-पत्रिकाओं में समावेश कराने, विद्यालयी स्तर पर अनुवाद-शिक्षण को जोड़ने तथा ज्ञान की नई संभावनाओं को खोजने पर भी बल दिया गया है। वास्तव में 'अनुवाद' को ''सेवा प्रदाता'' अनुशासन बनाने अर्थात् ''सर्विस प्रोवाइडर'' के रूप में उसका विकास करने का मार्ग भी प्रशस्त किया गया है। इसी से भारतीय भाषाओं के तथा विदेशी भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान-संपदा का प्रचार-प्रसार एवं आदान-प्रदान संभव हो जाएगा, अनुवाद से हम उपेक्षित अभिलेखों को, दस्तावेज़ों को, कलात्मक रचनाओं को, ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धियों तथा प्रदेय को विश्व के समक्ष उद्घाटित कर सकेंगे। ''नैशनल इंस्टीट्यूट फॉर इंडियन लॉंग्वेजिज'' की स्थापना करते हुए पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश आदि भाषाओं की विरासत को भी अनुवाद द्वारा उजागर किया जा सकेगा। बहुभाषावादी साहित्य-संस्कृति का विकास भी इसी से संभव हो सकेगा।

मौलिक लेखन एवं अनुवाद कर्म में तकनीक, प्रौद्योगिकी, मशीन तंत्र की यथा संभव मदद लेने, नए ''एप'' बनाने, कम्प्यूटर के फॉट निर्धारित करने, नए-नए सॉफ्टवेयर बनाने आदि के लक्ष्य निर्धारित करते हुए नई शिक्षा पद्धति–''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' का सपना साकार करने का मूलमंत्र लेकर आई है।

इस प्रकार नई शिक्षा नीति में अनुवाद की रचनात्मक भूमिका का निर्धारण संगीत, दर्शन, भारतीय पारंपरिक विद्याओं, कलाओं, सिद्धांतों तथा अनेक अनुशासनों में एक 'मील का पत्थर'' स्थापित करेगी। स्वतंत्र भारत में आज़ादी के पश्चात युवाओं के जो स्वप्न अधूरे रह गए थे, बिखर गए थे और 'सारा आकाश' उन्हें अपने लिए शून्य प्रतीत होता था, अब उसमें आशाओं के तारे टिमटिमाते प्रतीत हो रहे हैं, आलोक विकीर्ण करता चाँद मुस्कुराता दिखाई देने लगा है।

हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली